International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI)
Vol-6, Issue-1, 2021 | ISSN: 2581-6829, http://www.edusanchar.com

शोध पत्र

''भारतीय प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता''

शोधकत्री
रानी ओझा

मार्गदर्शिका
डॉ. सावित्री सिंगवाल

प्रस्तावना –

शिक्षा अनुभव के पुननिर्माण की अविराम प्रक्रिया है जिसका प्रयोजन उसकी सामाजिक अन्तर्वस्तु की और अधिक गहरा तथा विस्तृत बनाना है, साथ ही साथ व्यक्ति को उसमें अन्तर्निष्ठ पद्धति का नियंत्रण भी प्राप्त करना है। शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण व विकास के लिए वांछित परिवर्तनों को लाया जा सकता है और उसे जनसाधारण तक आसानी से पहुंचाया जा सकता है। पृथ्वी पर ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति के रूप में मानव है। मानव जीवन के मुख्य रूप से दो पक्ष है। शिक्षा सभ्य समाज का महत्वपूर्ण कार्यक्रम माना जाता है। उसे गौरवपूर्ण उच्चतम श्रेणी पर आसीन करती है। शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक विकास के साथ–साथ धैर्य, विवेक, सहिष्णुता, बौद्धिक और सामाजिक सफलता आदि मानवोचित गुणों से अलंकृत करते हुए उन्हे युगानुकूल समाज के परिवर्तित परिवेश मेंसुखमय जवीन जीने की कला का विश्वास जमाकर आदर्श मानव की श्रेणी में पहुंचा देती है। प्राचीनकाल में किसी समाज की शिक्षा मुख्य रूप से उसके जीवन दर्शन, आकार–प्रकार, अर्थव्यवस्था और शासनतंत्र पर निर्भर करती थी। इस युग में वह मनोविज्ञान और विज्ञान से प्रभावित होती है। आज इन सभी को शिक्षा का मूल आधार माना जाता है।

शिक्षा दर्शन शैक्षिक क्षेत्र के गहनतर समस्याओं का सम्पूर्ण अध्ययन करता है और शिक्षा विज्ञान के लिए उन समस्याओं का अध्ययन छोड़ देता है जो तात्कालिक है और जिनका सर्वोत्कृष्ट अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया जा सकता है, जैसे छात्रों की सम्पन्नता या

योग्यता के मापन की समस्या आदि। विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं के सिद्धान्तों का प्रयोग करके वह शिक्षा की समस्याओं की खोज करने के लिए मार्गदर्शन ग्रहण करता है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन का कार्य शुद्ध दर्शन द्वारा प्रतिपादित संघों एवं सिद्धान्तों को शैक्षिक प्रकिया के संचालन में प्रयो करना है।

''शिक्षा के सिद्धान्त'' (2006 पृ 185–194) शिक्षा एवं दर्शन का सम्बन्ध शरीर एवं चेतना के समान है। जिस प्रकार शरीर के बिना चैतन्य प्रकट नहीं होता और चेतना के बिना शरीर का कोई अर्थ नहीं रह जाता उसी प्रकार दर्शन शिक्षा के माध्यम से ही अपने आप को प्रकट करता है तथा शिक्षा दर्शन के बिना निष्पाण है। शिक्षा एवं दर्शन के बीच एक गहरा सम्बन्ध है इसलिए इन दोनो ही विषयों के संयोजन से शिक्षा दर्शन नामक विषय का विकास हुआ। दर्शन मानव जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और शिक्षा उस लक्ष्य प्राप्ति का साधन है।

शिक्षा अधिगम के मार्गदर्शन तथा नियंत्रण द्वारा अनुभव करने का सुविचारित प्रयास है। 'शारीरिक शिक्षा सिद्धान्त एवं व्यवहार' (1995 पृ 7) में लिखा है कि मनुष्य का व्यक्तित्व उसके सज्ञानमूलक, भावमूलक तथा प्रयत्नमूलक व्यवहार और उनके सम्बद्ध समस्त समान गुणों का एकीकृत प्रतिबिम्ब है। व्यक्तित्व के इन पक्षों की सकारात्मक विकास स्वतः नहीं होता, इसके लिए शिक्षा ही बालक या व्यक्ति की व्य–क्षमताओं के अनुरूप उच्चतम प्रशिक्षण प्रदान करती है। इसके द्वारा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी का विकास होता है। शिक्षा मनुष्य को वह सब प्राप्त करने में सहायता करती है। दार्शनिकों की दृष्टि से वह मनुष्य को अपने जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने योग्य बनाती है। समाजशास्त्रियों की दृष्टि से शिक्षा मनुष्य का सामाजीकरण करती है। सामाजिक नियंत्रण रखती है और सामाजिक परिवर्तन करती है। राजनीतिशास्त्रियों की दृष्टि से शिक्षा मनुष्य को श्रेष्ठ नागरिक बनाती है। अर्थशास्त्रियों अर्थशास्त्रियों की दृष्टि से मनुष्य में संगठन एवं उत्पादन कौशल का विकास करती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास तथा वैज्ञानिक दृष्टि से अन्तर्शक्तियों का बाह्य जीवन से सामंजस्य स्थापित करती है।

निष्कर्ष –

शिक्षा का दर्शन शिक्षा सम्बन्धी अनेक प्रश्नों का उत्तर खोजता है। इस सम्बन्ध में डॉ. एस.एस. माथुर का कथन समीचीन है कि ''शिक्षा का दर्शन, शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का दर्शन की दृष्टि से विवेचन करता है।'' शिक्षा–दर्शन प्रायः जीवन दर्शन होता है। जीवन दर्शन और शिक्षा दर्शन के मध्य कोई पार्थक्य नहीं किया जा सकता है। किसी शिक्षा–दर्शन का मूलत जीवन के आदर्शों एवं लक्ष्यों के संदर्भ में शिक्षा के उद्देश्यों के प्राप्तार्थ शैक्षिक कार्यक्रम और परीक्षा एवं शैक्षिक संगठनों का मूल्याकन, विषय–वस्तु विधियों, अध्यापक निर्माण, मापन इत्यादि से सम्बन्ध होता है। प्राचीन भारतीय दर्शन में जीवन का सच्चा सुख, सुच्चा ज्ञान, श्रेष्ठ आचरण, जीवन के प्रति निर्मल दृष्टि एवं उच्च आदर्श निहित है। अतः भारतीय प्राचीन दर्शन में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- गुप्त सुरेन्द्र दास (1972) : भारतीय दर्शन का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
- जैन हीरा लाल (1975) : भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान मध्य प्रदेश शासन साहित्य परिसर।
- नानेश आचार्य (1985) : विशेष के लिए द्रष्टव्य क्षमता दर्शन और व्यवहार, बीकानेर।
- कमल के.एल. (1996) : गांधी चिन्तन जयपुर पब्लिशिंग, जयपुर।
- सागर आचार्य सुनील (2005) : मानवता के आठ सूत्र, संस्कृति शोध संस्थान इन्दौर।
- श्री कनक नन्दी (1996) : सर्वोदयी शिक्षा मानो विज्ञान, धर्म दर्शन सेवा संस्थान उदयपुर।
- शर्मा रामचन्द्र (1985) : प्रमाणिक हिन्दीकोष, लोक भारती प्रकाशन।
- तुलसी आचार्य (1945) : आचार्य तुलसी का अमर संदेश, कोलकत्ता।